.प्राथमिक शिक्षा में निर्देशन की आवश्यकता

अनिता घोष
एसिस्टेंट प्रोफेसर, स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ एडुकेशन
सालबनी, पूर्वी सिंहभूम

सारांश

वर्तमान समय में निर्देशन शिक्षा का अभिन्न अंग बन गया है। अब शिक्षा सबके लिए और सब शिक्षा के लिए है। भारत सरकार ने भी संविधान में सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया है। यहाँ अनिवार्य शिक्षा का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता एवं बुद्धि क्षमता के आधार पर शिक्षित किया जाए। जो कि निर्देशन के द्वारा संभव है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में सुधार एवं पुर्नसंगठन में निर्देशन की आवश्यकता को दर्शाना है। हमारे देश की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली केवल शिक्षकों पर ही आधारित बनकर रह गई है। ऐसे में इस क्षेत्र में शैक्षिक निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी अग्रिम शिक्षा का उचित निश्चय नही कर पाते है। फलस्वरूप वे अपनी शिक्षा को बीच में ही छोड़ देते है। ऐसे में यह बहुत जरूरी हो गया है कि छात्रों को विद्यालय में समायोजित होने और अधिगम स्तर तथा बुनियादी कौशल में दक्षता प्राप्त करने हेतू शैक्षिक पथ प्रदर्शन सरलता से प्राप्त हो। इस अध्ययन कार्य में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। विवेचन एवं विश्लेषण पद्धति के द्वारा समस्याओं के मूल को समझने का प्रयास किया जाएगा एवं विभिन्न आलोचकों के मतों का उल्लेख भी किया जाएगा साथ ही कुछ आँकड़ों को भी प्रस्तुत कर निराकरण का प्रयास किया जाएगा। प्रस्तावित अध्ययन कार्य के मुख्य बिन्दु इस प्रकार होंगे – प्राथमिक शिक्षा में निर्देशन की दशा एवं दिशा, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में निर्देशन की प्रमुख बाधाएँ, प्राथमिक शिक्षा के निर्देशन की आवश्यकता।

मुख्य शब्द :- प्राथमिक शिक्षा, निर्देशन, निर्देशन प्रक्रम, अधिगम स्तर, बुनियादी कौशल

प्रस्तावना

निर्देशन का अर्थ है – निर्देश देना। यहाँ निर्देश शब्द का प्रयोग सलाह के अर्थ में किया जाता है। निर्देशन के विषय में यह कहा जाता है कि – यह किसी व्यक्ति को दी जानेवाली सलाह या सहायता है। यह सलाह या सहायता नैतिक, आध्यात्मिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक अनुभवी व्यक्ति द्वारा कम अनुभवी व्यक्ति को दी जाती है।

अपनी प्रारंभिक अवस्था में निर्देशन मात्र व्यावसायपरक समस्याओं से संबद्ध था। इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं के लिए रोजगार की व्यवस्था करना था। लेकिन कालांतर में यह केवल व्यावसायिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के जीवन के सभी पक्षों को समुचित स्थान दिया जाने लगा। इस प्रकार निर्देशन का क्षेत्र व्यक्ति तथा समाज के अंतः क्रियात्मक संबंधों तक विस्तृत एवं विकसित हो गया।

निर्देशन व्यक्ति के अपने लिए एवं समाज के लिए अधिकतम लाभदायक दिशा में, उसकी संभावित अधिकतम क्षमता तक विकास में सहायता प्रदान करने वाला निरंतर चलनेवाला प्रक्रम है।

स्टूप्स तथा वालक्विस्ट

साधारणतया सभी प्रकार की सुनियोजित व्यक्तिगत सहायता जो कि व्यक्ति की समस्याओं को सुलझाने तथा उसके जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होती है।

प्राथमिक शिक्षा में निर्देशन की दशा एवं दिशा

निर्देशन का आरंभ प्राथमिक स्तर की सबसे छोटी कक्षा से ही किया जाना अति आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर निर्देशन का प्रयोग बच्चे के घर से विद्यालय में स्थानांतरण को संतोषजनक बनाने, मूल शैक्षिक कौशलों को सीखने में आनेवाली कठिनाईयों के कारण खोजने, प्रतिभाशाली एवं पिछड़े हुए बच्चों और विकलांग बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं को पहचानने के लिए विद्यालयी शिक्षा को बीच में छोड़ देनेवाले बच्चों के लिए, शिक्षार्थियों को श्रम संसार के प्रति वांछित दृष्टिकोण एवं अंतर्दृष्टि विकसित करने में तथा प्रशिक्षण योजनाओं में सहायता देने में किया जा सकता है।

निर्देशन एवं परामर्श के क्षेत्र में भारत अन्य विकसित देशों की तुलना में काफी पीछे है। यद्यपि भारत में निर्देशन कार्यो की शुरूआत हो चुकी है किन्तु इसका विकास अपर्याप्त है। निर्देशन

का जो थोड़ा बहुत कार्य हो भी रहा है वह भी पूर्णतः दोष मुक्त नहीं है। निर्देशन कार्य के मार्ग में बहुत सारी बाधाएँ है।

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में निर्देशन की प्रमुख बाधाएँ हैं –

- **निर्देशन के क्षेत्र में शोधकार्य की कमी** –

  नई परिस्थिति से जन्म लेनेवाली नई समस्याओं का समाधान प्राप्त करने में शोधकार्य बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। शोधकार्य के द्वारा ही विभिन्न नए तथ्य एवं अनुभव सामने आते हैं। लेकिन दुर्भाग्य है कि निर्देशन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर देश के विश्वविद्यालयों में शोधकार्य नगण्य रहा है।

- **निर्देशन के विभिन्न अभिकरणों के बीच सामंजस्य का अभाव –**

  भारत में निर्देशन की जो थोड़ी बहुत सुविधा उपलब्ध है, सामंजस्य के अभाव में उनका उपयोग नहीं हो पाता। घर, विद्यालय, मनोचिकित्सा एवं राज्य निर्देशन ब्यूरो आदि अनेक अभिकरणों के परस्पर सहयोग एवं आदान-प्रदान के अभाव में निर्देशन कार्यो का उचित विकास संभव नहीं हो पाता है।

- **शिक्षकों पर कार्यभार की अधिकता –**

  निर्देशन का प्रारंभिक दायित्व शिक्षकों पर होता है किन्तु हमारे देश में प्राथमिक शिक्षक विशेषकर रजिस्टर अभिलेख, मतदान संबंधी कार्य, जनगणना संबंध कार्य, कापियाँ जाँचने संबंधी कार्य एवं अन्य कम महत्वपूर्ण कार्यो की अधिकता के कारण अपने मूल कार्य शिक्षण एवं निर्देशन संबंधी दायित्वों का पूर्णतः निर्वहन करने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं।

- **शिक्षक छात्र अनुपात –**

  भारत में शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने के बावजूद भी शिक्षक-छात्र अनुपात निर्धारित मानक स्तर तक नहीं पहुँच पा रहा है। एक कक्षा में छात्र संख्या इतनी अधिक होती है कि शिक्षक को प्रत्येक शिक्षार्थी से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ऐसे में शिक्षकों की कमी निर्देशन कार्य को अधिक कठिन बना देती है।

- निर्देशन सेवाओं की स्थिति में सुधार लाने के उपाय –

- **निर्देशन अवबोध विकसित करना –**

  समाज एवं विद्यालयों में जनसाधारण में निर्देशन संबंधी समझ को विकसित करने के उद्देश्य से विभिन्न निर्देशन कार्यक्रमों का संगठन किया जाए। शोधकार्यो को बढ़ावा दिया जाए।

- **सामंजस्य स्थापना –**

  निर्देशन के विभिन्न अभिकरणों के बीच उचित तालमेल के लिए निर्देशन का व्यापक संगठन स्थापित किया जाए तथा अन्य अभिकरणों को भी उससे जोड़ा जाए।

- **निर्देशन के प्रति जागरूकता –**

  अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निर्देशन अभिमुख जाए। शिक्षकों में निर्देशन संबंधी दृष्टि विकसित की जाए। निर्देशन एवं परामर्श को विषय के रूप में जोड़ा जाए।

- **संसाधनों की उपलब्धता –**

  शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, परामर्शदाताओं, शिक्षकों, प्रशासकों आदि को निर्देशन के महत्व एवं आवश्यकता को गंभीरता से अनुभव करना चाहिए तथा निर्देशन से संबंधित साहित्य एवं संसाधनों के एकीकरण एवं नियोजन में सहयोग करना चाहिए।

बच्चे किसी भी राष्ट्र के महानतम संसाधन स्त्रोत होते हैं। उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास में परिवार और विद्यालय दोनों की अहम् भूमिका होती है। विभिन्न शोधों से प्राप्त परिणामों से यह पता चलता है, कि प्राथमिक शिक्षा बच्चों की आगे की शिक्षा एवं जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण घटक होता है। हमें इस तथ्य को मानना ही होगा कि बच्चों के जीवन के शुरूआती ६ वर्ष उनके व्यक्तित्व विकास की अत्यंत संवेदनशील अवस्था होती है। जिसका प्रभाव उनकी बाद की शिक्षा पर देखा गया है।

आज शैक्षिक प्रयोग के केन्द्र में बालक है, परन्तु पूरी शिक्षा-व्यवस्था का चार केवल अध्यापकों के कंधों पर टिका हुआ है। समय के साथ-साथ अध्यापकों की भूमिकाओं में बदलाव तो आया है लेकिन मूलतः आज भी शिक्षा से संबंधित सभी दायित्व शिक्षकों पर ही आन पड़ती है। ऐसे में प्राथमिक शिक्षा में निर्देशन की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। देश में प्राथमिक शिक्षा की दशा एवं दिशा का अध्ययन करने वाली प्रतिष्ठित वार्षिक सर्वेक्षण रिपोर्ट – असर २०१८

द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार ग्रामीण भारत में ३ से १६ वर्ष तक के स्कूली बच्चों के पढ़ने के बुनियादी क्षमताओं पर सर्वे की रिपोर्ट जारी की गई है। जिसके तहत १५, ६६८ सरकारी विद्यालयों का अवलोकन किया गया। जो कि भारत के कुल ५६६ जिलों तक पहुँचा। जिसमें कुल मिलाकर ३५४६४.४ घरों के ३ से १६ वर्ष के आयु वर्ग के ५४६,५२७ बच्चों का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के अनुसार :-

- प्राथमिक स्तर पर स्कूली नामांकन की स्थिति - सन् २००७ से अब तक विद्यालयों में ६-१४ वर्ष के बच्चों के नामांकन का प्रतिशत तो ६५ः से अधिक रहा, लेकिन अनामांकित बच्चों की संख्या वर्ष २०१८ में पहली बार ०३ः से गिरकर २.८ः पर आ गई है। ये आँकड़ें भले ही उत्साहित करने वाले नजर आते हो, लेकिन प्राथमिक स्तर पर कक्षा ३ से ५ तक के स्कूली बच्चों के अधिगम स्तर और बुनियादी कौशलों के विकास में बहुत ही मामूली सुधार देखा गया है। अखिल भारतीय स्तर पर वर्ष २०१८ के सर्वेक्षण में प्रत्येक १० में से ०४ विद्यालय में प्राथमिक स्तर पर बच्चों के नामांकन की संख्या ६० से भी कम पाई गई है और पिछले एक दशक में ऐसे विद्यालयों का प्रतिशत बढ़ा है , जहाँ ६० से भी कम नामांकन होता है।
- छात्र उपस्थिति - वहीं अखिल भारतीय स्तर पर छात्र उपस्थिति की बात की जाए, तो यहाँ भी आँकड़ों में कोई बड़ा बदलाव दिखाई नहीं देता।

  पिछले कई वर्षो में भी सुधार के प्रयासों के बावजूद भी प्राथमिक विद्यालयों में छात्र उपस्थिति औसतन ७२ः ही रही।

- अधिगम-स्तर तथा बुनियादी कौशलों का विकास -

  इस असर २०१८ के सर्वेक्षण की जारी की गई रिपोर्ट के अनुसार कक्षा ३ के ऐसे बच्चे जो कक्षा २ के पाठों को सरलता से पढ़ सकते हैं, के आँकड़ों में वृद्धि देखी गई है। २०१६ ई० में जहाँ २५.१ः आँकड़ा था वहीं २०१८ ई० में यह २७.२ः हो गया। वहीं कक्षा ५ स्तर पर आधे से कुछ अधिक बच्चे ही ऐसे पाए गए, जो कक्षा २

के स्तर के पाठों को पढ़ने में सक्षम थे। जिसमें २०१६ ई० में यह आँकड़ा ४७.९ः था जो कि २०१८ ई० में ५०.३ः पर पहुँचा। वहीं कक्षा ८ तक के सिर्फ ७३ः बच्चे ही कक्षा २ के स्तर पाठों को पढ़ लेते हैं । इसके आँकड़ों में सन् २०१६ से कोई बदलाव नजर नहीं आया है।

वहीं गणित के बुनियादी सवालों को हल करने के कौशलों के मामले में देशभर के विद्यालयों के कक्षा ३ के बच्चों की संख्या अपरिवर्तनीय रही है। जहाँ सन् २०१६ में ऐसे बच्चों का आँकड़ा २७.६ः था वहीं २०१८ में यह २८.१ः ही रहा। सरकारी विद्यालयों में यह आँकड़ा २०१६ में २०.३०ः था जो कि २०१८ में मात्र २०.९ः ही रहा।

वहीं कक्षा ५ के स्तर के बच्चों का आँकड़ा २०१६ में २६ः था वह बहुत मामूली सुधार के साथ २०१८ में २७.८ः हो गया। जबकि कक्षा ८ स्तर के बच्चों के आँकड़ों में तो कोई बदलाव ही नहीं आया, बल्कि गिरावट ही देखी गई। फिलहाल तो कक्षा ८ तक के बच्चों में से मात्र ४३ः बच्चें ३ अंकों में एक अंक के भाग के सवालों को ही सही-सही हल कर पाते हैं।

– १३वीं एन्युअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट २०१८

अतः उपरोक्त आँकड़ों के आलोक में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में निर्देशन सेवाओं की आवश्यकता को बेहद महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत किए गए सुधारों के बावजूद भी केवल शिक्षकों पर निर्भरता के आधार पर शैक्षिक सुधारों को धरातल पर ला पाना पूरी तरह संभव नहीं। इसलिए प्राथमिक शिक्षा में निर्देशन सेवाओं को पूर्णतया सम्मिलित करना और गंभीरता पूर्वक उनके क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

निर्देशन सेवाओं का क्षेत्र एवं कार्य केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यवसायिक चयन में सहायता तक ही सीमित नहीं रह गई है। बल्कि इसका क्षेत्र और अधिक व्यापक हो गया है। निर्देशन का लक्ष्य समायोजन एवं विकास दोनों में सहायता पहुँचाना है। निर्देशन न केवल किसी बच्चे की घर तथा विद्यालय की परिस्थितियों में संभावित सर्वोत्तम समायोजन प्राप्त करने मे

सहायता करता है बल्कि किसी बच्चे के व्यक्तित्व के सभी पक्षों का विकास भी उसका लक्ष्य है। अतः निर्देशन को शिक्षा का संघटक तत्व माना गया है।

निर्देशन केवल शैक्षिक उद्देश्यों के अनुसार प्रदान की जानेवाली मनोवैज्ञानिक व सामाजिक सेवा तक ही सीमित नही है अपितु सभी शिक्षार्थियों के लिए अत्यावाश्यक भी है। यह एक निरंतर चलने वाला प्रक्रम है। जो शिक्षार्थी के समायोजन में तथा समय-समय पर निर्णय करने में सहायता प्रदान करता है। चूँकि जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान का प्राथमिक शिक्षा से गहन संबंध है इसलिए प्राथमिक शिक्षा में निर्देशन की दशा एवं दिशा पर चर्चा और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

निष्कर्ष

निर्देशन एक सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक प्रक्रिया है-निर्देशन का लक्ष्य लोगों को उद्देश्यपूर्ण बनने में न कि केवल उद्देश्यपूर्ण किया में सहायता देना है।

टिडेमैन

अतः यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति को ऐसा निर्देशन दिया जाए कि वह अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को भलीभाँति समझ सके और फिर उन लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य करें।

निर्देशन के क्षेत्र में भारत में स्थिति सुधारने हेतू माध्यमिक शिक्षा आयोग से सन् १९५२-५३ में महत्वपूर्ण सुझाव दिए जिनपर सरकार ने कुछ हद तक अमल भी किया। सन् १९६४ ई० में डॉ० दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में कोठारी आयोग की स्थापना हुई जिसमें निर्देशन के सभी पक्षों को शामिल करते हुए निर्देशन के विकास का व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसके विचार में निर्देशन का प्रारंभ प्राथमिक स्तर से ही हो। निर्देशन सेवा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण में प्रदान किया जाए। बच्चों के लिए ऐसा साहित्य सभी क्षेत्रिय भाषाओं में तैयार किया जाए जो उन्हें व्यावसाय की ओर उम्मुख करें। इसी को ध्यान में रखते हुए सन् १९५६ ई० में अखिल भारतीय शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन संघ का गठन हुआ, जो राष्ट्रीय स्तर के निर्देशन का प्रथम संगठन था। अनेक राज्य सरकारों अब रोटरी क्लब वाई० एम० सी० ए०, व्यक्तिगत महाविद्यालयों एवं मिशनरी की सहायता से निर्देशन संबंधी संस्थाओं की स्थापना कर जनता की सेवा आरंभ कर दी गईं हैं।

संदर्भ-सूची.

- उपाध्याय राधाबल्लभ, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा पृष्ठ संख्या ५।
- जयसवाल सीताराम – उपाध्याय राधाबल्लभ, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका, अग्रवाल पब्लिकेशनस, आगरा।
- चित्तौड़ा शशि डॉ, निर्देशन एवं परामर्श, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- उप्पल श्वेता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.आर.टी. प्रकाशन प्रभाग कार्यालय, नई दिल्ली।
- https://akmaurya3.wordpress.com/eat, 18/12/2017
- https://PGDVGee-05.com/19/12/17
- img.asercentre.org/11/4/19
- www.scotbuzz.org/2017/05/shaikshik-nirdeshan-ki-paribhasha.html/30/4/19